बाप समान फरिश्ता वर्ष

अव्यक्त मुरली रिवीजन – व्यर्थ बोल मुक्त

11.11.2012

1. **स्वमान** – मैं मास्टर सद्गुरु हूँ।

- भक्तिमार्ग में गुरु की आज्ञा को पत्थर पर लकीर की तरह माना जाता है...उनकी हर बात को सत्वचन-सत्वचन कहकर भक्तजन सिरमाथे पर रखते हैं....कितना मूल्य होता है गुरु के एक-एक बोल का....हम तो परम सद्गुरु की संतान मास्टर सद्गुरु हैं तो हमारे बोल कैसे होने चाहिए.... ?

2. **योगाभ्यास** –

अ. सदा इस स्वमान के सिंहासन पर स्थित रहें कि मैं मास्टर सद्गुरु हूँ....जैसे सद्गुरु बाबा के एक-एक बोल महावाक्य हैं, वैसे ही मुझ मास्टर सद्गुरु के बोल मधुर, कल्याणकारी व वरदानी हों....।

ब. बापदादा – 'जितना तुम योगयुक्त रहते हो, उतना ही तुम्हारी वाणी में जौहर भरता जाता है।' - तो हम सदा योगयुक्त रहकर अपनी वाणी में जौहर भरते चलें।

स. इस सप्ताह हम कुछ भी बोलने से पूर्व यह अभ्यास करें कि यदि साकार बाबा या अव्यक्त बापदादा इस बात को कहते तो कैसे कहते ? - इससे सारे दिन मीठे बाबा की याद स्वतः बनी रहेगी।

3. **धारणा – वरदानी बोल**

- `तुम्हारे बोल रिकार्ड करने योग्य हों।`
- `तुम्हारे बोल ऐसे हों जो सुनने वाले वन्स मोर-वन्स मोर कहें।`
- `तुम्हारे बोल ऐसे हों जो नाउम्मीदवार को उम्मीदवार बना दें।`
- `तुम्हारे बोल सुखदायी, स्वमानदायी व शुभभावनाओं से ओतप्रोत हों।`
- `यदि 5 शब्दों में काम चलता हो तो 50 शब्द मत बोलो।` **– शिवभगवानुवाच**

4. **स्वचिंतन** –

- कैसे हैं मेरे बोल - व्यर्थ, साधारण या श्रेष्ठ ? सारे दिन में इनकी प्रतिशत क्या है ? ?
- व्यर्थ बोल का कारण क्या है ?
- क्या सदा सार्थक व समर्थ बोल बोले जा सकते हैं ? यदि हाँ तो कैसे ? ?
- बोल के लिए बाबा के महावाक्य ?

5. **साधकों प्रति** – प्रिय साधकों ! आने वाले समय में हमें अपनी वाणी के द्वारा लोगों को वरदान देने हैं। उनके दुःख-दर्द हरने हैं, उनकी सर्व मनोकामनाएँ पूर्ण करनी है, उन्हें मुक्ति-जीवनमुक्ति का प्रसाद प्रदान करना है। इस महान् कर्त्तव्य को करने के लिए हमें अपने संकल्प शक्ति के साथ-साथ अपनी वाणी की शक्ति को भी जमा करना है, उसे व्यर्थ से बचाना है। जिसकी वाणी व्यर्थ से मुक्त होगी अर्थात् सदा समर्थ होगी, वही भविष्य में मास्टर सद्गुरु के रुप में प्रसिद्ध होंगे।